इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य

रश्मी नामदेव

व्याख्याता
शा हा स्कूलए बचरवारएपेण्ड्राए बिलासपुर छग

सारांश

हिन्दी भारत और विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। उसकी जड़ें प्राचीन भारत की संस्कृत भाषा में तलाशी जा सकती हैं। परंतु हिन्दी साहित्य की जड़ें मध्ययुगीन भारत की अवधीए मागधी ए अर्धमागधी तथा मारवाड़ी जैसी भाषाओं के साहित्य में पाई जाती हैं। हिंदी में गद्य का विकास बहुत बाद में हुआ और इसने अपनी शुरुआत कविता के माध्यम से जो कि ज्यादातर लोकभाषा के साथ प्रयोग कर विकसित की गई।हिंदी का आरंभिक साहित्य अपभ्रंश में मिलता है। हिंदी में तीन प्रकार का साहित्य मिलता है। गद्य पद्य और चम्पू। हिंदी की पहली रचना कौन सी है इस विषय में विवाद है लेकिन ज़्यादातर साहित्यकार देवकीनन्दन खत्री द्वारा लिखे गये उपन्यास चंद्रकांता को हिन्दी की पहली प्रामाणिक गद्य रचना मानते हैं।

हिन्दी साहित्य का इतिहास

हिंदी साहित्य का आरंभ आठवीं शताब्दी से माना जाता है। यह वह समय है जब सम्राट् हर्ष की मृत्यु के बाद देश में अनेक छोटे.छोटे शासन केंद्र स्थापित हो गए थे जो परस्पर संघर्षरत रहा करते थे। विदेशी मुसलमानों से भी इनकी टक्कर होती रहती थी। हिन्दी साहित्य के विकास को आलोचक सुविधा के लिये पाँच ऐतिहासिक चरणों में विभाजित कर देखते हैंए जो क्रमवार निम्नलिखित हैंरू.

- आदिकाल ;१४०० ईसवी से पहलेद्ध
- भक्ति काल ;१३७५.१७००द्ध
- रीति काल ;१७००.१९००द्ध
- आधुनिक काल ;१८५० ईस्वी के पश्चातद्ध
- नव्योत्तर काल ;१९८० ईस्वी के पश्चातद्ध

आदिकाल ;१०५० ईसवी से १३७५ ईसवीद्ध

हिन्दी साहित्य आ आदिकालको आलोचक १४०० ईसवी से पूर्व का काल मानते हैं जब हिन्दी का उद्भव हो ही रहा था। हिन्दी की विकास.यात्रा दिल्लीए कन्नौज और अजमेर क्षेत्रों में हुई मानी जाती है। पृथ्वीराज चौहान का उस समय दिल्ली में शासन था और चंदबरदाई नामक उसका एक दरबारी कवि हुआ करता था। चंदबरदाई की रचना श्पृथ्वीराजरासोश हैएजिसमें उन्होंने अपने मित्र पृथ्वीराज की जीवन गाथा कही है।श्पृथ्वीराज रासोश्हिंदी साहित्य में सबसे बृहत् रचना मानी गई है।कन्नौज का अंतिम राठौड़ शासक जयचंद था जो संस्कृत का बहुत बड़ा संरक्षक था।

भक्ति काल ;१३७५ दृ १७००द्ध

हिन्दी साहित्य का भक्ति काल १३७५ वि० से १७०० वि० तक माना जाता है। यह काल प्रमुख रूप से भक्ति भावना से ओतप्रोत काल है। इस काल को समृद्ध बनाने वाली दो काव्य.धाराएं हैं .1ण्निर्गुण भक्तिधारा तथा 2ण्सगुण भक्तिधारा। निर्गुण भक्तिधारा को आगे दो हिस्सों में बांटा जा सकता हैए संत काव्य ;जिसे ज्ञानाश्रयी शाखा के रूप में जाना जाता हैएइस शाखा के प्रमुख कवि ए कबीरए नानकए दादूदयालए रैदासए मलूकदासए सुन्दरदासए धर्मदास आदि हैं।

निर्गुण भक्तिधारा का दूसरा हिस्सा सूफी काव्य का है। इसे प्रेमाश्रयी शाखा भी कहा जाता है। इस शाखा के प्रमुख कवि हैं. मलिक मोहम्मद जायसीए कुतुबनए मंझनए शेख नबीए कासिम शाहए नूर मोहम्मद आदि।

भक्तिकाल की दूसरी धारा को सगुण भक्ति धारा के रूप में जाना जाता है। सगुण भक्तिधारा दो शाखाओं में विभक्त है. रामाश्रयी शाखाए तथा कृष्णाश्रयी शाखा। रामाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि हैं. तुलसीदासए अग्रदासए नाभादासए केशवदासए हृदयरामए प्राणचंद चौहानए महाराज विश्वनाथ सिंह ए रघुनाथ सिंह।

कृष्णाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि हैं. सूरदासए नंददासएकुम्भनदासए छीतस्वामीए गोविन्द स्वामीए चतुर्भुज दासए कृष्णदासए मीराए रसखानए रहीम आदि। चार प्रमुख कवि जो अपनी.अपनी धारा का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये कवि हैं ;क्रमशःद्ध

कबीरदास ;१३९९द्ध.;१५१८द्ध

मलिक मोहम्मद जायसी ;१४७७.१५४२द्ध

सूरदास ;१४७८.१५८०द्ध

तुलसीदास ;१५३२.१६०२द्ध

रीति काल ;१७००.१९००द्ध आचार्य राम चन्द्र शुक्ल के अनुसार

हिंदी साहित्य का रीति काल संवत १७०० से १९०० तक माना जाता है यानी १६४३ई० से १८४३ई० तक। रीति का अर्थ है बना बनाया रास्ता या बंधी.बंधाई परिपाटी। इस काल को रीतिकाल कहा गया क्योंकि इस काल में अधिकांश कवियों ने श्रृंगार वर्णनए अलंकार प्रयोगए छंद बद्धता आदि के बंधे रास्ते की ही कविता की। हालांकि घनानंदए बोधाए ठाकुरए गोबिंद सिंह जैसे रीति.मुक्त कवियों ने अपनी रचना के विषय मुक्त रखे।

केशव ;१५४६.१६१८द्धए बिहारी ;१६०३.१६६४द्धए भूषण ;१६१३.१७०५द्धए मतिरामए घनानन्द ए सेनापति आदि इस युग के प्रमुख रचनाकार रहे।

आधुनिक काल ;१८५० ईस्वी के पश्चातद्ध

आधुनिक काल हिंदी साहित्य पिछली दो सदियों में विकास के अनेक पड़ावों से गुज़रा है। जिसमें गद्य तथा पद्य में अलग अलग विचार धाराओं का विकास हुआ। जहां काव्य में इसे छायावादी युगए प्रगतिवादी युगए प्रयोगवादी युग और यथार्थवादी युग इन चार नामों से जाना गयाए वहीं गद्य में इसकोए भारतेंदु युगए द्विवेदी युगए रामचंद शुक्ल व प्रेमचंद युग तथा अद्यतन युग का नाम दिया गया।

अद्यतन युग के गद्य साहित्य में अनेक ऐसी साहित्यिक विधाओं का विकास हुआ जो पहले या तो थीं ही नहीं या फिर इतनी विकसित नहीं थीं कि उनको साहित्य की एक अलग विधा का नाम दिया जा सके। जैसे डायरीए यात्रा विवरणए आत्मकथाए रूपकए रेडियो नाटकए पटकथा लेखनए फ़िल्म आलेख इत्यादिए

नव्योत्तर काल ;१९८० ईस्वी के पश्चातद्ध

नव्योत्तर काल की कई धाराएं हैं . एकए पश्चिम की नकल को छोड़ एक अपनी वाणी पानाय दोए अतिशय अलंकार से परे सरलता पानाय तीनए जीवन और समाज के प्रश्नों पर असंदिग्ध विमर्श। कंप्यूटर के आम प्रयोग में आने के साथ साथ हिंदी में कंप्यूटर से जुड़ी नई विधाओं का भी समावेश हुआ हैए जैसे. चिट्ठालेखन और जालघर की रचनाएं। हिन्दी में अनेक स्तरीय हिंदी चिट्ठेए जालघर व जाल पत्रिकायें हैं। यह कंप्यूटर साहित्य केवल भारत में ही नहीं अपितु विश्व के हर कोने से लिखा जा रहा हैए इसके साथ ही अद्यतन युग में प्रवासी हिंदी साहित्य के एक नए युग का आरंभ भी माना जा सकता है।

21वीं सदी में हिन्दी साहित्य स्थिति एवं संभावनाएं

ष्इक्कीसवीं सदी में हिंदी साहित्य रू स्थिति एवं संभावनाएँष् विषय पर सूक्ष्मताओं के साथ विमर्श हो अपेक्षा है। भूतकालीन एवं वर्तमानकालीन साहित्य को देखकर भविष्य का हिंदी साहित्य कौन सी करवट ले सकता है इसको पकड़ने की हमारी कोशिश है। बाजारीकरणए औद्योगिकरण से मनु य एक.दूसरे के बहुत नजदीक पहूँच चुका है। एक.दूसरे के विचारों से सभी प्रभावित हो रहे हैं और यह प्रभावित होना इंसान का चहूंमुखी है। केंद्र में है अर्थ.पैसा। पैसा अपने अंगुलियों पर आदमी को नचाने की कोशिश कर रहा है। झुग्गी झोपड़ियाँ टूटीए घर बनेय गाँव टूटकर बिखर रहे हैंए नगर.शहर.महानगर बनते जा रहे हैं। रोज नवीन विकास यात्राएँ और उसके साथ नव.नवीन मुश्किलें। आदमी की कठिनाइयाँ साहित्य में उतरना लाजमी। हिंदी साहित्य का आदिकालीन युग राजाओं और राजकवियों काए मध्ययुग भकित श्रृंगार कवियों काए आधुनिक युग नवजागरण और परिवर्तन का और भविष्य ६ यह केवल हम क्योंए हमारे साथ आप भी सोचे इक्कीसवीं सदी में हिंदी साहित्य कौन सी दिशाओं की ओर जा खा है और संभावनाएँ कौन सी बन रही है ६ इसका उत्तर देती यह पुस्तक। यह केवल हम क्योंए हमारे साथ आप भी सोचे इक्कीसवी सदी में हिंदी साहित्य कौनसी दिशाओं की ओर जा रहा है और संभावनाएँ कौनसी बन रही है ६ इसका उत्तर देती यह पुस्तक इस किताब में व्यक्त विचार समीक्षकों के अपने हैं इनसे संपादक और प्रकाशक की नीतियों व विचारों का सहमत होना आवश्यक नहीं है।देखते.देखते इक्कीसवीं सदी के ग्यारह साल गुजर गए। परिस्थितियाँ बदल रही हैय विश्व स्तर पर 2020 या उसके बाद के भारत की स्थितियों की तरफ देखने का नजरिया बदल रहा है। उभरती हुई एक बड़ी ताकत के नाते अमरिका जैसे विकसित देश भारत की तरफ स्पर्धात्मक दृष्टि से देख रहे हैं। परंतु हमारे मन में साषंकता है क्यों ६ क्योंकि घर की मुर्गी दाल बराबर समझने की हमारी आदत है। पर थोड़ा सोचेए दिमाग पर जोर देंए तो दावे के साथ कह सकते हैं 2020 तक ना सही थोड़ा आगे जाकर भारत विश्व की बड़ी ताकत बनेगा इसमें कोई शक नहीं।

बड़ी ताकतए विश्व के साथ स्पर्धाए गिने.चुने लोगों में भारत का स्थानए अच्छा लगता है। चारों तरफ से भारत का परिवर्तन हो रहा हैए खुशी है। यह परिवर्तन उद्योग और आर्थिक दृष्टियों से हो रहा है वैसे ही सामाजिकए सांस्कृतिकए धार्मिक स्थितियों में होगा और इसका असर साहित्यिक दृष्टियों से भी पड़ेगा। भारतीय व्यक्ति जैसे.जैसे बदल रहा है वैसे.वैसे उसकी भाषा भी बदल रही है। वह समय दूर नहीं जहाँ पर भारत की सारी भाषाएँ एक.दूसरे के साथ घुलमिलकर एक नया रूप धारण करेंगी। विविध कार्यों से एक आदमी कई गाँवोंए शहरों और देशों में पहुंच रहा है। देश एवं भाषाओं की सीमाओं को लांघ रहा है। ऐसी स्थिति में साहित्य भी बदले आश्चर्य नहीं लगेगा। वर्तमान का वर्णन और भविष्य का संकेत साहित्य है। कुछ साल पहले साहित्य में पीड़ित.शोषित वर्ग का चित्रण नाममात्र रहा परंतु आज उसकी बाढ़ आ चुकी है। दबे.कुचले लोगों ने अपनी वाणी को धारदार बनाकर साहित्य जगत को खंगाल डाला पर इसके संकेत तो 1920.30 से मिल रहे थे। मनुष्य की कल्पनाएँ साहित्य में उतरती है और साहित्य का आधार लेकर विज्ञान विकसित होता है। ष्पुष्पक यानेष् का जिक्र रामायण में आया आधुनिक युग में हवाई जहाज बने। भारत का आरंभिक साहित्य रामायणए महाभारत से युद्ध से संबंधित कई ताकतों का जिक्र हैए जिनको काल्पनिक मानकर मजाक किया जा सकता है पर आप अणुशक्तियों से जोड़कर उसे देखे तो कल्पना काफुर हो जाती है।

ष्इक्कीसवीं सदी में हिंदी साहित्य रू स्थिति एवं संभावनाएँष् विषय पर इन्हीं सूक्ष्मताओं के साथ विमर्श हो अपेक्षा है। भूतकालीन एवं वर्तमानकालीन साहित्य को देखकर भविष्य का हिंदी साहित्य कौनसी करवट ले सकता है इसको पकड़ने की हमारी कोशिश है। बाजारीकरणए औद्योगिकरण से मनुष्य एक.दूसरे के बहुत नजदीक पहुँच चुका है। एक.दूसरे के विचारों से सभी प्रभावित हो रहे हैं और यह प्रभावित होना इंसान का चहूंमुखी है। केंद्र में है अर्थ.पैसा। पैसा अपने अंगुलियों पर आदमी को नचाने की कोशिश कर रहा है। झुग्गी झोपड़ियाँ टूटीए घर बनेय गाँव टूटकर बिखर रहे हैंए नगर.शहर.महानगर बनते जा रहे हैं। रोज नवीन विकास यात्राएं और उसके साथ नव.नवीन मुश्किलें। आदमी की कठिनाइयाँ साहित्य में उतरना लाजमी। हिंदी साहित्य का आदिकालीन युग राजाओं और राजकवियों काए मध्ययुग भक्ति श्रृंगार कवियों काए आधुनिक युग नवजागरण और परिवर्तन का और भविष्य ६

इक्कीसवीं सदी की चुनौतियाँ और श्हिन्दी

भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपनी भावनाओं और विचारों को किसी दूसरे के समक्ष अभिव्यक्त करते हैं और दूसरे की भावनाओं और विचारों को समझते हैं। इससे अलग भाषा की कोई और परिभाषा हो ही नहीं सकती। भाषा का संबंध मनुष्य और समाज से है। भाषा कोई व्यक्तिगत् या विशेष समूहगत् सम्पत्ति नही बल्कि वह एक सामाजिक निधि है। इसलिए सामाजिक सरोकारों से परे कोई भाषा हो ही नहीं सकती। किसी भी देश में राष्ट्र भाषा का सम्मान उस भाषा को ही प्राप्त होता है जो देश विशेष में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोलीजाती है। निश्चित तौर पर भारत देश का एक बहुत बड़ा जनमानस हिन्दी भाषा से परिचित है। इसलिए यह प्रस्तावितकिया गया कि भारत में

राष्ट्रभाषा का अधिकारी होने का सम्मान हिन्दी भाषा को प्रदान दिया जाए। जैसे ही किसी को कोई भी अधिकार प्रदान किया जाता हैंए कर्तव्य स्वयं ही निर्दिष्ट हो जाते हैं। और कर्त्तव्य पुनरू अधिकारों का सृजन करते हैं। अतरू इन दोनों का एक दूसरे से पूरक संबंध है। अधिकार कर्त्तव्यों के बगैर अधूरे होते है और कर्त्तव्यअधिकार के बगैर। इसे एक छोटे से उदाहरण के साथ समझना उचित होगा। जैसे ही किसी भी दम्पत्ति को माता.पिता बनने का अधिकार प्राप्त होता है वैसे ही उस दम्पत्तिके कर्त्तव्य भी स्वयं ही निर्दिष्ट हो जाते हैं। उस नए बच्चे के प्रति माता तथा पिता दोनों के अपने.अपने उत्तरदायित्व होते हैं जिन्हें वे किसी के कहने पर नहींए स्वयं की शर्तों पर पूरी नैतिकता के साथ वहन करते हैं। जैसे संस्कार वे रोपते हैंए बच्चा उसकी प्रतिक्रिया वैसे ही देता है।बिल्कुल इसी तरह यही समीकरण ज्ञान के क्षेत्रा पर भी लागू होता है। किसी भी भाषा के राष्ट्रभाषा के रूप में चिह्नित होते ही उसके दायित्वों में वृद्धि होजाती है। अब यह भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं रह जाती बल्कि वह समूचे राष्ट्र काप्रतिनिधित्व विश्व के समक्ष करती है। कभी भी भाषा का संबंध केवल साहित्य से नहीं होता। साहित्य तो भाषा का एक पक्ष मात्रा है। साहित्य समाज के समक्ष नई.नई चुनौतियों को लेकर खड़ा होता हैए समाज को मानवता के दृष्टिकोण से चिंतन मनन करने को बाध्य करता है। जबकि भाषा का कार्य क्षेत्रा बहुत विशाल होता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्रा को अभिव्यक्त करने के लिए भाषा को सदैव चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जीवन को संचालित करने के लिए अनुभव और ज्ञान के संतुलन की आवश्यकता होती है। और अनुभव तथा ज्ञान नामक ये दोनों ही पक्ष अपने किास के लिए भाषा की अतुलनीय समृद्धि की माँग करते हैं।

हिन्दी की लोकप्रियता आज कितनी बढ़ गई है इसका आकलन इस तथ्य से ही किया जा सकता है कि दक्षिण भारत जो कभी इसका विरोधी था वहाँ आज लगभग प्रत्येक विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग आरंभ हो चुके । इतना ही नहीं तेलगुए तमिलए कन्नड़ व मलयाली साहित्य का बड़ी तेजी से हिन्दी में अनुवाद हो रहा है। दक्षिण भाषी हिन्दी अध्यापकबहुत बड़ी संख्या में इन विश्वविद्यालयों में कार्य कर रहे हैं। इतना ही नही अभी हाल ही में अमेरिका जैसे देश ने भी एशियाई देशों की राष्ट्रभाषा सीखने हेतु अपने अकादमिक जगत को निर्देशित किया हैए जिसमें हिन्दी को प्रमुख स्थान दिया है।जहाँ तक साहित्यिक पक्ष का प्रश्न है निरूसंदेह हिन्दी भाषा की रचनात्मक क्षमता अपनी पूरी उर्जा के साथ यहाँ प्रकट होती है। अधिसंख्य लोग यह संदेहप्रकट करते हैं कि अब पाठक वर्ग बहुत कम रह गया है तो प्रश्न यह भी है कि हिन्दी की कितनी पत्रिकाएँ लगातार प्रकाशित हो रही हैं। एक बड़ी संख्या में घरेलूए मनोरंजनपरक पत्रिकाएँ हमारे समक्ष हैं और कितनी साहित्यिक पत्रिकाएँ। फिर भी लगातार ही कुछ नई पत्रिकाएँ जन्म लेती जा रही हैं।अभी वर्तमान वर्ष से ही आरंभ होने वाली पत्रिकाएँ हैं शब्द योगए लोकायतए शिखरए सृजन पथए पाठ आदि। छत्तीसगढ़ के अम्बिकापुर जैसे छोटे शहर से भी पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है।

हिन्दी की पत्रिकाएँ न केवल हिन्दी भाषी से बल्कि कुछ विदेशी प्रयास भी इस दिशा में लगातार हो रहे हैं। दुबईमें रहने वाले कृष्ण कुमार के प्रयास से अमेरिका और भारत दोनों के संयुक्त तत्वावधान में श्अन्यथाृ जैसी महत्वपूर्ण साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन चंडीगढ़ से हो रहा है। इसके अतिरिक्त श्स्पैनृ नामक हिन्दी भाषी पत्रिका का प्रकाशन अमेरिका कर रहा हैए जो साहित्यिक के अतिरिक्त सामाजिक पक्षों पर भी चिंतन प्रस्तुत कर रही है। विज्ञान के क्षेत्रा में भी श्विज्ञान प्रसारृ जैसी पत्रिका का यह प्रयास सार्थक है कि यह पत्रिका एक साथ हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में प्रक्ाशित होती है। चाहे यह प्रयास बहुत छोटे स्तर का ही क्यों न होए प्रयास सराहनीय है।

इसके अतिरिक्त हिन्दी की वेब पत्रिकाएँ भी आरंभ हो चुकी हैं। मनीषा कुलश्रेष्ठ की वेब पत्रिका हिन्दी जगत् में अपना स्थान बना चुकी है। ज्ञात हुआ है कि इस दिशा में श्बीबीसीृ रेडियो प्रसारण अब एक और महत्वपूर्ण कदम उठाने हेतु प्रयासरत् है। हिन्दी जगत् के भावी परिदृश्य को सकारात्मक भाव.बोध से भरता है।कहने मतलब यह कि जब इतने सारे स्तरों पर साहित्यिक जगत् हिन्दी की स्थापना हेतु प्रयास कर रहा है तो फिर क्याकारण हैं कि हिन्दी को उसका निर्धारित स्थान प्राप्त करने में इतना अधिक समय लग रहा है। इसका उत्तर देने के पहले मैगसेसे पुरस्कार से पुरस्कृत जल संरक्षण आंदोलन के् प्रमुख राजेन्द्र सिंह के एक अनुभव परबात करना प्रासंगिक होगा। राजस्थान की सूखी बंजर ज़मीन पर जब राजेन्द्र जी के प्रयासों से हरियाली छाने लगी तो उनकी तकनीकों की उपादेयता सभी को नजर अरने लगी। जल संरक्षण के सूत्राधार श्री राजेन्द्र सिंह ने जल संरक्षण कोविकसित करने के लिए किसी किताब का अध्ययन नहीं किया था। हिन्दी इस तरह यदि मौलिक ज्ञान से जुड़ती है. जो सहज हैए तो वह विकास के उदात्त स्वरूप को प्राप्त कर सकती है।
यदि परम्परा में बसे ज्ञान का पक्ष अद्यन्त उद्घाटित नहीं हुआ है तो लोक साहित्य को परखने का नजरिया परिवर्तित कर अपनी भाषा को उदात्त और सर्वव्यापी बनाया जा सकता है। लोक संस्कृतिए लोक गीतए कथाए गाथाए पहेली को यदि बतौरमनोरंजन और संस्कृति अध्ययन न करते हुए ज्ञान के रूप में अध्ययन करें तो जाने कितने रोगों की दवाए

सामाजिक मूल्य उद्घाटित हो जायेंगे। और भारतीय समाज में पहले चिकित्सक को कविराज कहा ही जाता था। जो चीज़ें संग्रहणीय हैंए उठा ली जायें बाकी छोड़ दी जायें। पर हम घाल.मेल अधिक करते हैं। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में भी भारत के दक्षिणी भाग से संवाददाता के रूप में सूचना प्रदान करने वाले दक्षिण भारतीय हिन्दी बोलते ही दिखाई देते हैं। हिन्दी भाषा ने व्यावसायिकता के आधार पर जो सम्मानित दशा प्राप्त की हैए उसे अभी और आगे जाने की आवश्यकता है।

ज्ञान को भाषा से जोड़ना जहाँ भाषाहीनता से बचने का महत्वपूर्ण हल है वहीं ज्ञान से जुड़ते ही हमारा परिचय नयी शब्दावली से होता है। अंग्रेजी भाषा आधुनिक ज्ञान की प्रबल संवाहक है इसलिए ज्ञानात्मक क्षेत्रा में उसका विस्तार है।

बावजूद इसके अंग्रेजी भाषा लगभग २५० नये शब्द प्रतिवर्ष अपने शब्दकोष में जोड़ती है। समय के विकास के साथ. साथ भाषा के अपने प्रतिमान और पारिभाषिक शब्दावलियाँ पुरानी और बोथरी होती चली जाती है। नये शब्दों का जुड़ाव यानी नये ज्ञान से परिचय यानी संवेदना में विस्तार। प्रत्येक समय की अपनी माँग होती है। इस माँग के अनुसार भाषा का चोलाहोता है। आज का समय पहपजंसकपअपकमका है। सूचना तकनीकि के मकड़जाल में अपने अस्तित्वकी रक्षा अपने ज्ञान के माध्यम से हो सकती है। सूचना तकनीकि को अपनी शब्दावलियाँ लेने को बाध्य करने वाली भाषा भाषाहीनता की स्थिति मे नहीं हो सकती।

राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति

हमारे देश का संविधान 2 वर्षए 11 माह तथा 18 दिन की अवधि में निर्मित हुआ तथा 26 जनवरीए 1950 को लागू हुआ था। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व देश में स्वतंत्रता आंदोलन के साथ.साथ हिंदी को देश की राष्ट्रभाषा बनाये जाने की सर्वाधिक मांग की जाती रही थी।संविधान निर्माताओं ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने की मांग को दृष्टिगत रखते हुए संविधान सभा ने 14ध्9ध्1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा स्वीकार करते हुए राजभाषा हिंदी के संबंध में प्रावधान किए।संविधान के भाग 5 एवं 6 के क्रमशरू अनुच्छेद 120 तथा 210 में तथा भाग 17 के अनुचछेद 343ए 344ए 345ए 346ए 347ए 348ए 349ए 350 तथा 351 में राजभाषा हिंदी के संबंध में निम्न प्रावधान किये गए हैं। इन प्रावधानों के साथ ही संप्रति भारत की 22 भाषाओं को संविधान की अनुसूची. 8 में मान्यता दी गई है। ये भाषाएँ इस प्रकार हैं.

हिंदीए पंजाबीए उर्दूए कश्मीरीए संस्कृतए असमियाए ओड़ियाए बांगलाए गुजरातीए मराठीए सिंधीए तमिलए तेलुगुए मलयालमए कन्नड़ए मणिपुरीए कोंकणीए नेपालीए संथालीए मैथिलीए बोड़ो ता डोगरी।

सन 1967 में 21वें संविधान संशोधन द्वारा सिंधी भाषा 8वीं अनुसूची में जोड़ी गई थी। सन 1992 में 71वें संविधान संशोधन द्वारा कोंकणीए नेपाली तथा मणिपुरी भाषाएँ 8वीं अनुसूची में जोड़ी गई थीं। सन 2003 में 92वें संविधान संशोधन द्वारा संथालीए मैथिलीए बोडो तथा डोगरी भाषाएँ 8वीं अनुसूची में जोड़ी गई थीं।

संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा

संविधान के अनुच्छेद 120 के अंतर्गत संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा के संबंध में प्रावधान किया गया है।

अनुच्छेद 120 के खंड ;1द्ध के अंतर्गत प्रावधान किया गया है कि संविधान के भाग.17 में किसी बात के होते हुए भी किंतु अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए संसद में कार्य हिंदी में या अंग्रेजी में किया जायेगाए परंतु यथा स्थिति लोक सभा का अध्यक्ष या राज्य सभा का सभापति अथवा उस रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति सदन में किसी सदस्य कोए जो हिंदी में या अंग्रेजी में अपनी पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं कर सकता हैए तो उसे अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने की अनुमति दे सकता है।

अनुच्छेद 120 के खंड ;2द्ध के अंतर्गत प्रावधान किया गया है कि जब तक संसद विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करेए तब तक संविधान के प्रारंभ के समय से पन्द्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात यह अनुच्छेद इस प्रकार प्रभावी होगा मानो. या अंग्रेजी में शब्दों का लोप कर दिया गया हो।

विधान मंडल में प्रयोग की जाने वाली भाषा

संविधान के अनुच्छेद 210 के अंतर्गत विधान मंडल में प्रयोग की जाने वाली भाषा के संबंध में प्रावधान किया गया है।अनुच्छेद 210 के खंड ;1द्ध के अंतर्गत प्रावधान किया गया है कि संविधान के भाग.17 में किसी बात के होते हुए भी किंतु अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुएए राज्य के विधान मंडल में कार्य राज्य की राजभाषा या राजभाषाओं में या हिंदी में या अंग्रेजी में किया जायेगाए किंतु यथा स्थितिए विधान सभा का अध्यक्ष या विधान परिषद का सभापति अथवा उस रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति सदन में किसी भी सदस्य कोए जो अपने राज्य की राजभाषा या राजभाषाओं अथवा हिंदी अथवा अंग्रेजी में से किसी भी भाषा में अपनी पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं कर सकता हैए तो उसे अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने की अनुमति दे सकता है।अनुच्छेद 210 के खंड ;2द्ध के अंतर्गत प्रावधान किया गया है कि जब तक राज्य का विधान मंडल विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करेए तब तक संविधान के लागू होने के समय से पन्द्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के बाद यह अनुच्छेद ऐसे प्रभावी होगा मानो. या अंग्रेज़ी में शब्दों का उसमें से लोप कर दिया गया हो।

संघ की राजभाषा

संविधान के भाग.17 के अनुचछेद 343 से 351 तक में राजभाषा संबंधी प्रावधान किये गए हैं।

संविधान के अनुच्छेद 343 के अंतर्गत संघ की राजभाषा के संबंध में प्रावधान किया गया है।

अनुच्छेद 343 के खंड ;1द्ध के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी संघ की राजभाषा है। संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा। तथापि संविधान के इसी अनुच्छेद 343 के खंड ;2द्ध के अनुसार किसी बात के होते हुए भी इस संविधान के लागू होने के समय से पन्द्रह वर्ष की अवधि ;अर्थात 26 जनवरीए 1965द्ध तक संघ के उन सभी राजकीय प्रयोजनों के लिए वह संविधान के लागू होने के समय से ठीक वह संविधान के लागू होने के समय से ठीक पहले प्रयोग की जाती थी। ;अर्थात् 26 जनवरीए 1965 तक अंग्रेजी उन सभी प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाती रहेगीए जिनके लिए वह संविधान के लागू होने के समय से पूर्व प्रयोग की जाती थी।द्धअनुच्छेद 343 के खंड ;2द्ध के अंतर्गत यह भी प्रावधान किया गया है कि उक्त पन्द्रह वर्ष की अवधि में भी अर्थात् 26 जनवरीए 1965 से पूर्व भी राष्ट्रपति आदेश द्वारा किसी भी राजकीय प्रयोजन के लिए अंग्रेजी के साथ साथ देवनागरी रूप के प्रयोग की अनुमति दे सकते हो।

निष्कर्ष

हिंदी भाषा के उज्ज्वल स्वरूप का भान कराने के लिए यह आवश्यक है कि उसकी गुणवत्ताए क्षमताए शिल्प.कौशल और सौंदर्य का सही. सही आकलन किया जाए। यदि ऐसा किया जा सके तो सहज ही सब की समझ में यह आ जाएगा कि .

1 संसार की उन्नत भाषाओं में हिंदी सबसे अधिक व्यवस्थित भाषा है
2 वह सबसे अधिक सरल भाषा है
3 वह सबसे अधिक लचीली भाषा है
4 वह एक मात्र ऐसी भाषा है जिसके अधिकतर नियम अपवादविहीन हैं तथा
5 वह सच्चे अर्थों में विश्व भाषा बनने की पूर्ण अधिकारी है
6 हिन्दी लिखने के लिये प्रयुक्त देवनागरी लिपि अत्यन्त वैज्ञानिक है।
7 हिन्दी को संस्कृत शब्दसंपदा एवं नवीन शब्दरचनासामर्थ्य विरासत में मिली है। वह देशी भाषाओं एवं अपनी बोलियों आदि से शब्द लेने में संकोच नहीं करती। अंग्रेजी के मूल शब्द लगभग १०ए००० हैंए जबकि हिन्दी के मूल शब्दों की संख्या ढाई लाख से भी अधिक है।
8 हिन्दी बोलने एवं समझने वाली जनता पचास करोड़ से भी अधिक है।
9 हिन्दी का साहित्य सभी दृष्टियों से समृद्ध है।
10 हिन्दी आम जनता से जुड़ी भाषा है तथा आम जनता हिन्दी से जुड़ी हुई है।
11 हिन्दी कभी राजाश्रय की मुहताज नहीं रही।
12 भारत के स्वतंत्रता.संग्राम की वाहिका और वर्तमान में देशप्रेम का अमूर्त.वाहन
13 भारत की सम्पर्क भाषा
14 भारत की राजभाषा

सन्दर्भ

1ण **आचार्य रामचन्द्रए शुक्ल ;2013द्धण हिंदी साहित्य का इतिहासण इलाहाबादरू लोकभारती प्रकाशनण पृ° 54ण**

2ण *भ्पदकनेजंदप ;2005द्धण कीथ ब्राउनए संपाण एनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ लैंगुएज एंड लिंग्विस्टिक्स ;2 संपाण्द्धण एल्सेवियरण ैठछ 0.08.044299. 4ण*

3ण *ैप्नमदबम व िमिअमदजे ूपजी तममितमदबम जव वपिबपंस संदहनंहम व िजीम न्दपवदष् ओरिजनल से 2 ।नहनेज 2011 के पुरालेखितण*

4ण *ष्मदजतंस भ्पदकप क्पतमबजवतंजमरू प्दजतवकनबजपवदष्*

5ण *छवतकीवििए ैमइेंजपंदय भ्उउंतेजतद्मउए भ्तंसकय थ्वतामसए त्वइमतजय भ्ैचमसउंजीए डंतजपदए संपाण्ण ;2013द्धण ष्भ्पदकपष् ळसवजजवसवह 2ण्2ण स्मपच्रपहरू डंग च्संदबा प्देजपजनजम वित म्अवसनजपवदंतल ।दजीतवचवसवहलण्ैे1* उंपदजरू कपेचसंल.मकपजवते ;सपदाद्ध

6ण ीजजचरूध्ध्ूूूण्जीमीपदकनण्बवउध्दमूेध्दंजपवदंसधीपदकप.दवजं..दंजपवदंस.संदहनंहम.बवनतजध्ंतजपबसम94695ण्मबम

7ण श्रंउमे म्ण ।संजपेय ।प.भ्नप ज्पंद ;7 ैमचजमउइमत 2001द्धण ळमवतहमजवूद न्दपअमतेपजल त्वनदक ज्ंइसम वद स्ंदहनंहमे ंदक स्पदहनपेजपबे ;ळन्त्ज्द्ध 1999रू स्ंदहनंहम पद व्नत ज्पउमरू ठपसपदहनंस म्कनबंजपवद ंदक व्पिबपंस स्ंदहनंहमे ंदक ैजंदकंतक स्ंदहनंहमे प्उउपहतंजपवद ंदक जीम न्द्र प्दपजपंजपअमण ळमवतहमजवूद न्दपअमतेपजल च्तमेेण पपण 319दृण ैठछ 1.58901.854.0